बाल्टी में पाँच मिनट डुबो कर हथेलियाँ ऊपर उठा दीं उसने। फफोले नहीं पड़े थे, पर हथेलियाँ ताजी रची मेंहदी की तरह लाल सुर्ख थीं।

रेत का गुबार उड़ाती भीड़, शोर के साथ लौटने लगी। पंच फटकार रहे थे सास को।

बाई-बाई करके नंदू और बंसी आकर उसकी पीठ से चिपक गए। धीरे-धीरे हचक कर चलता हुआ रामकिसन उसकी ओर बढ़ रहा था। रोड पर रफ्तार से जाती फटफटी की आवाज सुगना के कानों में देर तक गूँजती रही।

मनीषा कुलश्रेष्ठ

युवा लेखिका मनीषा कुलश्रेष्ठ का जन्म 27 अगस्त, 1967 को हुआ। अब तक तीन कहानी संग्रह 'बौनी होती परछाईं', 'कठपुतलियाँ' और 'कुछ भी तो रूमानी नहीं' प्रकाशित हो चुके हैं। कश्मीर की पृष्ठभूमि पर पहला उपन्यास 'शिगाफ़' नाम से शीघ्र प्रकाश्य है। मनीषा हिन्दी साहित्य की पहली वेब पत्रिका 'हिन्दी नेस्ट डाट कॉम' का प्रकाशन भी करती हैं।

बॉस की पार्टी

–संजय कुंदन

वह काफी देर से आईने के सामने खड़ा हँसने की कोशिश कर रहा था। इस प्रयास में उसने कई विचित्र मुद्राएँ बनायीं, तरह-तरह की आवाजें निकालीं। हालाँकि वह आश्वस्त नहीं हो पा रहा था कि यह सब जो उसने किया है, उन्हें हँसी की श्रेणी में शामिल किया जा सकता है या नहीं।

जीवन में पहली बार उसके भीतर यह सवाल उठ रहा था कि हँसी आती कहाँ से है और कैसे? क्या हँसी के आने से पहले शरीर में कोई सरसराहट होती है जैसे बारिश पत्तों पर दस्तक देती है? क्या त्वचा का रंग बदलने लगता है, पुतलियाँ कुछ अलग तरह से हरकत करने लगती हैं?

जिन्दगी की सबसे स्वाभाविक क्रिया उसके लिए चुनौती बन गई थी। ऐसा लग रहा था कि वह किसी दूसरे ग्रह का प्राणी हो जो इनसान बनाने की कवायद में जुटा है।

किसी गहरे आघात से जैसे कुछ लोगों की याददाश्त चली जाती है उसी तरह उसकी हँसी चली गयी थी। कब चली गई थी, याद न था। कितनी चोटें खाने के बाद ऐसा हुआ था, इसका कोई हिसाब न था। पर वह हँसना चाहता था क्योंकि हँसना अब उसे जरूरी लगने लगा था।

वह उस हँसी को नहीं ढूँढ रहा था जो चली गई थी। वह अपने भीतर उस हँसी से मिलती-जुलती एक और हँसी हँसने की ताकत पैदा कर रहा था। वह ऐसी हँसी की तलाश कर रहा था जो सामने वाले को प्रसन्न कर दे। उसे ऐसी हँसी की दरकार थी जो उसे हर माहौल में स्वीकार्य बनाये। जो उसे छुपा ले। जिसे रोते हुए भी हँसा जा सके।

जो उसका परम मूर्ख और अज्ञानी होना साबित कर सके।

उसका नाम देवेश कुमार था और वह एक निजी कम्पनी में असिस्टेंट मैनेजर था। वह अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ दिल्ली के निम्न मध्यवर्गीय लोगों के मोहल्ले में एलआईजी फ्लैट में किराए पर रहता था।

दो दिन पहले उसके जीवन में एक ऐसी घटना घटी जिसने उसे हँसी खोजने पर मजबूर कर दिया था। हुआ यह कि परसों उसके दफ्तर में प्रमोशन और सालाना इन्क्रीमेंट की लिस्ट आई थी। एक बार फिर देवेश का प्रमोशन नहीं हुआ था। उसे हर बार की तरह बस दो सौ रुपए की इन्क्रीमेंट दी गई थी। यह उसके लिए दुखद था लेकिन उसके परिवार के लिए यह वज्रपात साबित होनेवाला था क्योंकि देवेश से ज्यादा उसका परिवार प्रमोशन की उम्मीदें पाले बैठा था। पिछले छह महीने से उसका परिवार प्रमोशन की कल्पना के साथ जी रहा था।

पत्नी ने योजना बना रखी थी कि उसका प्रमोशन होगा तो वे लोग एलआईजी छोड़कर एमआईजी में चले जाएँगे। चूँकि बच्चे बड़े हो रहे थे इसलिए अब एक और कमरे की जरूरत पड़ रही थी। बच्चे भी तरह-तरह के ख्वाब देख रहे थे। उसका बेटा चीनू कहता, 'पापा का प्रमोशन होगा तो साइकिल लूँगा।'

बेटी रिंकी की ख्वाहिश थी, 'पापा का प्रमोशन होते ही डांस क्लास में एडमिशन लूँगी।'

अब छोटे-छोटे प्रसंगों में भी उसका प्रमोशन शामिल था। जब एक चादर थोड़ी फट गई तो पत्नी ने कहा, 'अब प्रमोशन के बाद ही नयी चादर लेंगे।'

एक दिन उसने देवेश से कहा, ''तुम बहुत कमजोर होते जा रहे हो। तुम्हें रोज एक गिलास दूध पीना चाहिए, लेकिन अभी बड़ी मुश्किल से बच्चों को ही मिल पाता है। कोई बात नहीं, प्रमोशन के बाद दो किलो लेना शुरू कर देंगे।''

प्रमोशन न होने से ये सार सपने दम तोड़ चुके थे। देवेश यह सोचकर काँप उठा कि जब उसकी पत्नी और बच्चों को यह पता चलेगा तो उन पर क्या गुजरेगी।

दफ्तर के सारे लोगों को प्रमोट किया गया था। यहाँ तक कि प्रिंस कुमार को लगातार दूसरी बार प्रोन्नति दी गई थी। प्रिंस कुमार उसका जूनियर था। पिछले साल प्रमोशन पाकर वह उसके समकक्ष आ गया था। अब वह उसका सीनियर हो जानेवाला था। जीवन में पहली बार देवेश अपमान की चुभन महसूस कर रहा था।

देवेश ने तय किया कि वह अपने जीएम मिस्टर बत्रा से साफ-साफ बात करेगा। आखिर किस अपराध का दंड मिला है उसे? दिन-रात खटने और अक्सर अपने दफ्तर के काम के लिए छुट्टी के दिनों को स्वाहा करने का क्या यही परिणाम है?

यह झटके से मिस्टर बत्रा के केबिन में घुसा और उसके सामने की कुर्सी पर बैठ गया।

''एनीथिंग सीरियस?'' बत्रा ने मुँह बनाकर पूछा।

''यस!'' देवेश ने जोर से कहा।

''बताइए।''

''मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि मुझे किस अपराध का दंड मिला है?''

''दंड, कैसा दंड?''

''सबको प्रमोशन मिला लेकिन मुझे नहीं।''

''देखो देवेश, यह तो टॉप मैनेजमेंट का डिसीजन है।''

''सर, आप मुझे बहलाइए मत। मुझे पता है आप जो रिकमेंड करते हैं वही होता है। आपने मुझे रिकमेंड क्यों नहीं किया?''

बत्रा ने कुछ नहीं कहा। वह इधर-उधर देखने लगा। देवेश बोला, ''सर मैं आपसे कुछ पूछ रहा हूँ। यह जानने का मुझे पूरा हक है। आपने मुझे प्रमोशन क्यों नहीं दिया? मुझमें ऐसी क्या कमी है? क्या मैं ठीक से काम नहीं करता?''

''काम ही सबकुछ नहीं है। बिहेवियर भी कोई चीज है।''

''मेरे व्यवहार में कमी है? मैं तो यहाँ किसी से ज्यादा मतलब ही नहीं रखता।''

''यही तो बात है। आप यहाँ इन्वॉल्व नहीं होते। लगता ही नहीं कि आपको कम्पनी से कोई मतलब है। आप हर समय खोये रहते हैं। इसका तो यही अर्थ हुआ कि आप हर समय पर्सनल प्रॉब्लम के बारे में सोचते रहते हैं।''

देवेश के लिए यह अप्रत्याशित था। उसने कहा, ''सर, महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि मैं क्या सोचता हूँ। असल बात है कि मैं करता क्या हूँ...।''

''यही तो मैं कह रहा हूँ।'' बत्रा ने बात काटते हुए कहा, ''आप अपनी बॉडी लैंग्वेज सुधारें। पता नहीं आप किस दुनिया में जीते हैं। हमें अप टू डेट मैनेजर्स चाहिए। समझ गए न कवि जी...।''

बत्रा ने जब 'कविजी' कहा तो उसकी आँखों में वही शरारत झलकी जो अक्सर नजर आया करती थी बत्रा देवेश को 'कवि जी' कहकर चिढ़ाया करता था।

बत्रा की नजर में 'कविजी' वह शख्स नहीं था जो कविताएँ लिखता हो। अच्छी हिन्दी बोलनेवाले, गुमसुम रहनेवाले सारे लोग उसकी नजर में कवि थे, उसके लिए शुद्ध हिन्दी बोलना एक मजाक का विषय था।

एक बार फिर बत्रा ने कहा, 'समझ गए न कवि जी! चाय पिएँगे?'

''नहीं, बिलकुल नहीं।'' देवेश ने कुर्सी से उठते हुए कहा।

''अरे आपकी वाली पिलाऊँगा।'' बत्रा ने कहा और जोर से हँसा।

''आपकी वाली'' से उसका आशय उस चाय से था जिसमें दूध और चीनी डाली जाती थी। वह खुद काली चाय पीता था और उसे ही असली तथा सम्भ्रान्त लोगों की चाय बताता था। उसका कहना था कि चाय में चीनी और दूध डालना पिछड़ेपन की निशानी है। जब वह अपने चैम्बर में मैनेजरों की मीटिंग करता तो लोगों को खुद चाय बनाकर देता। जब देवेश को वह चीनी डालते हुए देखता तो हँसते हुए कहता, 'कवि टाइप लोग चाय नहीं शरबत पीते हैं।'

कपि टाइप लोगों में वह उन्हें शामिल करता था जो कॉन्वेंट में नहीं पढ़े थे, जो पिछड़े हिन्दी भाषी प्रदेशों के निम्न मध्यवर्गीय लोग थे। उसका मानना था कि इन लोगों में सिविक सेंस नहीं होता। ये लोग कहीं भी नाक छिड़क देते हैं या पेशाब कर देते हैं। ये मजदूर या क्लर्क बनने के लायक ही हैं। ये अच्छे मैनेजर नहीं बन सकते।

वह इन लोगों के लिए एक और शब्द का इस्तेमाल करता था–एचएमटी यानी हिन्दी मीडियम टाइप।

'आपकी वाली' कहकर बत्रा ने देवेश को उसकी औकात याद दिलाने की कोशिश की थी। देवेश इस प्रस्ताव को ठुकराकर बाहर निकल आया।

बाहर आते ही उसकी नजर प्रिंस कुमार और घनश्याम पर पड़ी। वे कुछ फुसफुसा रहे थे। देवेश को देखते ही वे सकपकाते हुए इधर–उधर हो गए। देवेश को लगा ये लोग जरूर उसकी और बत्रा की बातें सुनने की कोशिश कर रहे होंगे।

ये दोनों बत्रा के खास आदमी थे। ये भी 'एचएमटी' ही थे लेकिन इनकी हर समय कोशिश रहती थी कि वे ऐसा कुछ करें कि इस श्रेणी से बाहर नजर आयें। बत्रा जब हिन्दी माध्यम से पढ़ने वाले लोगों की हँसी उड़ा रहा होता तो प्रिंस कुमार और

घनश्याम ने सिर्फ उसका समर्थन करते बल्कि ऐसे लोगों की असफलताओं के कुछ किस्से भी प्रस्तुत कर देते।

देवेश अपनी सीट तक आया। एक अजीब सी झनझनाहट हो रही थी पूरे शरीर में। वह बैठने का साहस नहीं कर पा रहा था। वह काफी देर तक यूँ ही इधर–उधर टहलता रहा। वह समझ नहीं पा रहा था कि अपने परिवार को कौन–सा मुँह दिखाएगा।

वह शाम को इस तरह घर पहुँचा जैसे कोई अपराध करके आया हो। उसे लग रहा था प्रमोशन न होने की बात सुनकर पत्नी कहीं बरस न पड़े। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। वह इतना ही बोली, ''अब किस्मत में जो लिखा रहेगा वही होगा न।'' दोनों ने तय किया कि इस बात की भनक बच्चों को नहीं लगने देनी है। अगर वे पूछेंगे तो बात टाल दी जाएगी।

देवेश को रात भर नींद नहीं आई। रह–रहकर बत्रा की बातें याद आ रही थीं। कहीं ऐसा तो नहीं कि बत्रा उससे पीछा छुड़ाना चाहता है। इस उम्र में देवेश नौकरी छोड़ने का जोखिम कैसे ले सकता है। अब दूसरी जगह आसानी से नौकरी मिल जाएगी, इसकी क्या गारंटी है।

यही रहना पड़ेगा। लेकिन कैसे? सम्भव है बत्रा उसे और अपमानित करे। उसे अपने आपको बदलना होगा। उसे अपने को दफ्तर के अनुकूल बनाना होगा।

कहीं ऐसा तो नहीं कि यह सब उसके न हँस पाने के कारण हो रहा है। प्रिंस कुमार और घनश्याम हर समय हँसते रहते थे खासकर बत्रा के सामने। बत्रा की हर बात पर वे हँस देते थे। बत्रा की हँसी में वे अपनी हँसी मिलाते थे। पता नहीं वे कैसे जान जाते थे कि बत्रा अब हँसेगा और वे हँसने लगते थे। देवेश उस वक्त अपने को असहाय महसूस करता। वह चुपचाप बैठा रहता।

बत्रा ने आज उससे कहा था कि वह इन्वॉल्व नहीं होता। कहीं उसके न हँसने का बत्रा ने यह अर्थ तो नहीं लगा लिया।

उसे याद है एक बार उन लोगों के सामने बत्रा ने कहा था, ''इस देश में तानाशाही की जरूरत है। सारी पॉलिटिकल पार्टियों के दफ्तरों पर ताला लगा देना चाहिए।''

इस बात पर प्रिंस कुमार और घनश्याम ने पहले सहमति में सिर हिलाया फिर हँसने लगे। बत्रा भी जोर से हँसा।

''और आपकी क्या राय है कवि जी?'' बत्रा ने देवेश से पूछा।

देवेश इस बात से सहमत नहीं था। उसने कहा, ''यह आपकी राय हो सकती है।''

''हाँ, आप तो डेमोक्रेसी रखेंगे ही ताकि आपके भाई-बन्धु चोरी करें और नेता लोग उन्हें छुड़ा सकें।''

इस बेतुकी बात पर भी देवेश को छोड़कर सब हँसे।

एक बार बत्रा ने कहा, ''जिनका वेतन पाँच हजार रुपए मासिक से कम है उन्हें बच्चा पैदा करने का अधिकार नहीं होना चाहिए। अगर वे बच्चे पैदा करें तो उन्हें जेल में डाल दिया जाए।''

घनश्याम और प्रिंस कुमार ने इस बात पर ऐसा मुँह बनाया जैसे कोई बहुत बड़ी बात की दी गई हो। वे इस पर भी हँसे।

अगर उनकी ही तरह देवेश भी हँसा होता तो शायद वह भी बत्रा की गुड बुक में होता और आज उसे यह दिन न देखना पड़ता। इस तरह बत्रा ने उसके सपने पर लात न जमाई होती।

अपने लिए न सही मगर परिवार के लिए हँसी को ढूँढ़ना जरूरी था। इतने दिनों तक तो बगैर हँसी के भी जीवन की गाड़ी निकलती चली आई थी। लेकिन अब उसके बगैर काम नहीं चलनेवाला था।

उसके दिमाग पर जोर देकर याद करने की कोशिश की–वह पिछली बार कब हँसा था? उसे अपने बच्चों के साथ हँसी के कुछ प्रसंग याद आए पर वह ठीक-ठीक याद नहीं कर सका कि ऐसा कब हुआ था। अब तो बच्चों के साथ भी वह कम ही समय बिता पाता था। पत्नी के साथ अब सिर्फ समस्याओं पर ही बात होती थी। उसमें हँसने की गुंजाइश कम ही थी। अक्सर चर्चा तनाव में ही खत्म होती थी। मोहल्ले के कुछ लोग जब दाँत निपोरते हुए उसे नमस्कार करते तो वह बस हाथ जोड़ देता। थोड़ी-बहुत बातचीत कर लेता लेकिन मुस्कुराने की कोशिश नहीं करता। दफ्तर में वह किसी से भी ज्यादा बात करने से बचता था।

लेकिन शुरू से वह ऐसा नहीं था। वह तो एक हँसमुख आदमी था। हर समय अपनी हँसी बिखेरता चलता था। स्कूल में उसके एक टीचर उसे हँसमुख लाल कहकर पुकारते थे।

वह हँसते-हँसते ही जीना चाहता था। उसके कद की तरह उसकी इच्छाएँ भी छोटी थीं। उसे बच्चों के साथ रहना पसन्द था। वह बचपन में अपने से छोटे बच्चों के

साथ रहता और उनके लिए नए-नए खेल रचता था। वह अपने मोहल्ले के बच्चों का प्रिय 'भइया' था।

धीरे-धीरे उसने अपना लक्ष्य तय कर लिया कि वह प्राइमरी स्कूल का मास्टर बनेगा और कभी सम्भव हुआ तो बच्चों के लिए अलग स्कूल खोलेगा। जब वह मैट्रिक में था तब उसने अपने पिताजी को अपने लक्ष्य के बारे में बताया। पिताजी ने सिर पीट लिया। बोले, ''मुझे नहीं पता था कि तुम मेरे सपनों को इस तरह मिट्टी में मिला दोगे। मेरे जैसा छोटा आदमी तुम्हारे लिए इतना ऊँचा सोचता है और एक तुम हो कि...। तुम्हें आखिर किस चीज की कमी है।''

देवेश समझ नहीं पाया कि उसके शिक्षक बनने की योजना पर पिताजी इतने दुखी क्यों हो गए। पिताजी ने अपनी संघर्ष गाथा विस्तारपूर्वक सुनाई कि किस तरह उन्होंने बचपन में एक दुकान में काम करते हुए पढ़ाई की और काफी दौड़-धूप और जुगाड़ करके रूटीन क्लर्क बने। यह कथा सुनाने का मकसद यह था कि देवेश शिक्षक जैसे तुच्छ पद का सपना न देखे, वह बड़ा अफसर बनने का ख्वाब देखे। इसके लिए उसके पिता हर तरह का त्याग करने के लिए तैयार हैं।

पिताजी ने अपनी संघर्ष गाथा को एक छड़ी की तरह इस्तेमाल किया। देवेश को जब भी वे पढ़ाई छोड़कर इधर-उधर घूमते-फिरते देखते तो भावुक होकर कहने लगते, ''एक मैं था कि इतनी विपत्ति के बीच भी अपना रास्ता किसी तरह बनाया और एक तुम हो कि...।''

यह सुनकर देवेश एक अपराध बोध से भर उठता था। इससे उबरने का एक ही रास्ता था कि वह किताब खोलकर बैठ जाए। यह अलग बात थी कि उसका अपनी पाठ्य पुस्तकों में जरा भी जी नहीं लगता था। मैट्रिक में वह एम.ए. स्तर की मनोविज्ञान या इतिहास की पुस्तकें पढ़ता था लेकिन अपनी किताबें बहुत कम छूता था।

बावजूद इसके वह ठीक-ठाक अंकों से पास हुआ और अपने कस्बे के एक कॉलेज में पढ़ने लगा। वहाँ वह अपनी एक सहपाठी के प्रेम में पड़ गया। यह भी एक अलग तरह का ही प्रेम था। उन दिनों लड़के-लड़कियों में बहुत कम ही बात हो पाती थी। कस्बे का माहौल ऐसा नहीं था कि वे कॉलेज में खुलकर बात कर सकें या कहीं और मिल सकें।

उन्होंने एक रास्ता निकाला। वे कॉलेज से निकलते और दो अजनबी यात्रियों की तरह बस या टेम्पो में सवार हो जाते। कई बार तो उन्हें आस-पास सीट भी नहीं मिलती

थी फिर भी इस मोहल्ले से उस मोहल्ले घूमते रहते। वे एक टेम्पो से उतरते और दूसरे में सवार हो जाते। बीच–बीच में एक–दूसरे को देखते और मुस्कुराते। कभी–कभी बात भी करते। कस्बे के किसी भीड़–भाड़ वाले इलाके से गुजरते हुए देवेश कल्पना में खोया रहता कि वह अपनी प्रेमिका के साथ रंगीन बादलों पर चल रहा है या किसी घाटी में चहलकदमी कर रहा है। तब उसके पास खूब हँसी थी। उसके रोएँ–रोएँ से हँसी के सोते फूट पड़ते थे।

न जाने कैसे पिताजी को उसके प्रेम का पता चल गया। उन्होंने उसकी मोहब्बत के विरोध में एक बार फिर वही हथियार इस्तेमाल किया। उन्होंने उसे समझाया, ''देखो इस उम्र में प्रेम हो ही जाता है। लेकिन यह भी उसी को होता है जिसे भरपेट भोजन मिलता है, जिसके पास अच्छा बिस्तर और मकान रहता है। यह सब तुम्हारे पास है। यह सब तुम्हें इसलिए नसीब हुआ है क्योंकि मैंने अपने जीवन में भारी कष्ट उठाए हैं। नमक और धनिया तौलते हुए मैंने पढ़ाई की।'' यह कहकर वे थोड़ा ठहरे फिर अपनी आँखें पोंछीं और कहना शुरू किया, ''वैसे यह प्रेम तो है नहीं। इस उम्र में इसी तरह सबको शरीर लुभाता है। चलो मान लिया कि यह प्रेम है। लेकिन इसका क्या अन्त होगा, यह कभी सोचा है? जब तक प्रेम है, तब तक तो ठीक, लेकिन उसके बाद? तुम लोग तो यही सोचोगे न कि शादी कर लें। उसी के बाद तो सारी समस्या शुरू होगी। तुम पढ़ाई–लिखिाई पर ध्यान दे नहीं रहे हो। इस खतरनाक समय में नौकरी–चाकरी मिलना इतना आसान नहीं है। जब दाल–रोटी का मामला आएगा न तो सारा प्यार उड़ जाएगा। तब पछताओगे कहाँ फँस गए। पत्नी बनते ही हर लड़की एक जैसी हो जाती है। अभी वह परी लग रही फिर रणचंडी नजर आने लगेगी। बाकी तुम सोच लो...।''

एक बार फिर वह गहरे अपराधबोध से भर गया। उसने कॉलेज जाना ही बन्द कर दिया। एक बच्चे के माध्यम से उसकी प्रेमिका ने सन्देश भी भिजवाया पर उसने कोई जवाब नहीं दिया, हालाँकि कल्पना में वह उससे मिलता रहा, हँसता–बोलता रहा।

काफी दिनों बाद परीक्षा के दौरान उससे मुलाकात हुई। उसने बताया कि उसकी शादी तय हो गई है। फिर वह फूट–फूटकर रोने लगी। देवेश को एक तरह से राहत महसूस हुई लेकिन यह भी लगा कि अब वह कभी हँस नहीं पागए। वह आगे की पढ़ाई के लिए दूसरे शहर में चला आया। यहाँ उसका जरा भी मन नहीं लगता था। लेकिन वह जब भी निराश होता अपने पिता की संघर्ष गाथा को याद कर लेता।

यहाँ उसका हँसना कम हो गया था पर हँसी पूरी तरह खत्म नहीं हुई थी। यहाँ भी वह कुछ बच्चों को ट्यूशन पढ़ा रहा था पर इनके साथ उतना मजा नहीं आता था जितना अपने शहर के बच्चों के साथ आता था।

पिताजी के कहने पर वह बड़े बेमन से प्रतियोगिता परीक्षाओं में बैठता रहा पर सफलता हाथ नहीं लगी। फिर उसने एक मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट में डिप्लोमा किया। यह उसके काम आया। उसे दिल्ली की एक निजी कम्पनी में नौकरी मिल गई।

पिताजी बड़े प्रसन्न हुए। बेटा दिल्ली में नौकरी करेगा–यही उनके लिए गर्व का विषय था। हालाँकि राजधानी में ऐसी ढेरों कम्पनियाँ थीं लेकिन 'असिस्टेन्ट मैनेजर' पद में एक वजन था चाहे तनख्वाह जो भी हो। पिताजी ने हर जगह देवेश की तनख्वाह चार गुना बढ़ाकर बताई और उसके ओहदे का खूब ढिंढोरा पीटा। साल बीतते ही अपने से ज्यादा हैसियत वाले परिवार में देवेश का रिश्ता भी तय कर दिया। देवेश ने उनके हर निर्णय को जिस तरह स्वीकार किया था उसी तरह इसे भी मंजूर कर लिया।

नया जीवन उसे रास नहीं आया था। कहाँ तो वह शिक्षक बन बच्चों की खिलखिलाहट के बीच एक शान्त जीवन गुजारना चाहता था, कहाँ उसके हिस्से में एक आपाधापी का जीवन आ गया था। एक थोपी हुई जिन्दगी ने उसकी हँसी को लील लिया था।

लेकिन इस जीवन के लिए हँसी जरूरी थी, वह हँसी जो भले ही उसकी अपनी न हो मगर अपनी जैसी लगे। उसे हँसी की जरूरत थी। वह जो स्वीकृति की हँसी, हो, वह जो सहमति की हँसी हो, वह जो अधीनता की हँसी हो।

उसने तय किया कि वह कल से हँसेगा।

दूसरे दिन जब वह दफ्तर के लिए निकला तो उसे लगा जैसे वह परीक्षा देने के लिए जा रहा हो। आज तक उसने कई परीक्षाएँ दी थी। पर किसी में भी वह इस तरह नर्वस नहीं हुआ था।

दफ्तर पहुँचते ही उसके पसीने छूटने लगे। समझ में आ गया कि हँसना कितना कठिन काम है। जब चपरासी उसकी टेबल पर पानी रखने आया तो जग से थोड़ा छलग गया। इस पर देवेश ने हँसने की कोशिश की। उसने ताकत लगाकर हँसी सरीखी आवाज निकाली जिससे वह चपरासी घबरा गया। उसने सन्देह की नजरों से देवेश को घूरा और चला गया।

देवेश बाथरूम में जाकर हँसने का अभ्यास करने लगा। थोड़ी ही देर बाद एक हाथ उसकी पीठ पर रेंगने लगा। फिर लगा कोई पूरी ताकत लगाकर उसकी पीठ दबा

रहा है। उसकी तथाकथित हँसी हवा हो गई। वह तेजी से पलटा। उसके पीछे उसके सहयोगी मिश्राजी खड़े थे।

देवेश ने झेंपते हुए पूछा, 'क्या बात है?'

''सर, मुझे लगा कि आपको उलटी आ रही है इसलिए मैं पीठ दबाने लगा।''

''लेकिन आप आए कब।'' देवेश को लगा जैसे उसकी चोरी पकड़ी गई।

''अभी-अभी सर!''

''ठीक है ठीक है,'' यह कहकर देवेश जल्दी से अपनी सीट पर आ गया। पता नहीं मिश्राजी ने उसके बारे में क्या सोचा होगा।

तभी बत्रा दिखाई पड़ा। देवेश ने सोचा, यही मौका है। क्यों न वह अपनी मुस्कुराहट के साथ उसका स्वागत करे। उसकी बदली हुई मुद्रा बत्रा को यह अहसास दिलाएगी कि उसके कहने पर देवेश में परिवर्तन आ रहा है। बत्रा की नाराजगी कुछ कम होगी।

देवेश उठा और हँसने की कोशिश करता हुआ बत्रा की ओर बढ़ा। उसे लगा कोई चीज उसके गले में घुसती जा रही है। उसे अपने पैर भी जमते से मालूम पड़े। उसने अपने को घसीटा।

वह बत्रा तक पहुँचा लेकिन समझ नहीं पाया कि क्या करे। उसने बस हाथ जोड़ दिए। बत्रा ठिठका। उसने देवेश के ऊपर से नीचे तक देखा फिर अजीब-सा मुँह बनाकर बोला, 'कहिए, फिर कोई शिकायत...।'

'नहीं सर, बस ऐसे ही।' देवेश ने अपने को सामान्य बनाने की कोशिश की।

'ऐसे ही!' बत्रा को जैसे विश्वास नहीं हुआ वह उसे घूरता हुआ चला गया। देवेश अपनी सीट पर लौट आया। जब उसने और लोगों को हँसी-मजाक करते देखा तो उसे हैरत हुई।

एक समय था जब वह भी इसी तरह हँसी-मजाक करता था। खूब हँसता-हँसाता था पर आज...। उसने इंटरनेट पर हँसी से सम्बन्धित वेबसाइट की खोज शुरू कर दी। उसे पता चला कि हँसी का बाकायदा एक विज्ञान है जिसे गेलोटोलॉजी कहते हैं। उसने इसके बारे में जानकारियाँ खँगाल डालीं। यह तो कहा गया था कि हँसी आती क्यों है लेकिन इसके बारे में कुछ नहीं कहा गया था कि हँसी जाती क्यों है। हँसने के क्या-क्या फायदे हैं यह तो बताया गया था लेकिन न हँसने के क्या-क्या नुकसान हैं, इस पर एक

लाइन नहीं मिली।

एक जगह लिखा था कि मन की किसी जटिल गुफा से हँसी फूटती है। आदमी जब प्रसन्न होता है तो हँसता है। हँसते हुए आदमी तनावमुक्त हो जाता है। हँसी रक्तचाप कम करती है इसलिए यह एक व्यायाम है। लोगों को कोशिश करके हँसना चाहिए। यही वजह है कि शहरों में अब लाफिंग क्लब खुलने लगे हैं जहाँ लोग ठहाके लगाते हैं।

देवेश ने सोचा, वह भी तो लगातार कोशिश कर ही रहा है हँसने की। आज नहीं तो कल, सफलता मिल ही जाएगी। वह हिम्मत नहीं हारेगा।

तभी उसने घनश्याम और प्रिंस कुमार को बत्रा के जन्म-दिन के बारे में बात करते सुना। कल यानी रविवार को बत्रा का बर्थ डे था और वे दोनों बर्थ डे पार्टी में जाने की योजना बना रहे थे।

बत्रा हर साल अपने जन्म दिन पर एक भव्य पार्टी का आयोजन करता था। दफ्तर के लोग उसमें आमन्त्रित नहीं होते थे पर प्रिंस कुमार और घनश्याम बिना बुलाए पहुँच जाते थे। दूसरे दिन वे दफ्तर में पार्टी की चर्चा करते और लोग मुग्ध होकर सुनते। देवेश उनसे दूर रहता। आज तक उसने बत्रो को मुबारकबाद तक नहीं दी थी। लेकन इस बार उसे अपना रवैया बदलना होगा। खामखाँ बत्रा से दूरी बनाए रखने का क्या मतलब है। अगर वह भी पार्टी में चला जाए तो बत्रा को अच्छा लगेगा। वह पार्टी में घनश्याम और प्रिंस कुमार की तरह हँसता हुआ बत्रा के सामने खड़ा रहेगा। बत्रा को यह अहसास कराना जरूरी है कि वह झुक रहा है।

आज सुबह उसकी नींद जल्दी खुल गई थी। उसे पार्टी में जाना है, यह सोचकर वह रोमांचित हो उठा। उसने सोचा आज दिन भर वह प्रैक्टिस करेगा और अपनी देह पर फावड़ा-हथौड़ा मार-मारकर कहीं-न-कहीं से हँसी की धार निकार बाहर करेगा।

संयोग से उसका परिवार जल्दी ही पड़ोस में किसी के यहाँ पूजा में चला गया। देवेश बाथरूम में आईने के सामने अपने अभियान में जुट गया।

अपना चेहरा देखते हुए उसने सोचा इसमें कुछ ऐसा बदलाव लाना चाहिए जिससे दूसरों को हँसी आ सके और उसे भी। सोचते हुए उसकी नजर अपनी मूँछों पर पड़ी। अरे! यह तो पहले सूझा ही नहीं। इन्हें विदा किया जाए। मूँछों से मुक्ति पा लेने से उसका एक अलग ही व्यक्तित्व सामने आएगा।

एक बार उसने कॉलेज के दिनों में मूँछें सफाचट कर ली थीं। उसका खूब मजाक

बनाया गया था। वह सबसे सफाई देता फिरता था कि गलती से कट गई हैं। वह तो दाढ़ी बना रहा था लेकिन रेजर फिसलकर मूँछों पर चला गया।

देवेश ने जल्दी से शेविंग क्रीम निकाली और मूँछों पर लगाने लगा। फिर वह ब्रुश धोकर उन पर रगड़ने लगा।

'काट दूँगा मैं उन्हें। मैं वह सब कुछ काटकर फेंक दूँगा जो मेरे परिवार को खुशहाली से दूर रख रहे हैं। मैं अपने मन-मस्तिष्क से झाड़-झंखाड़ उखाड़ फेकूँगा जिन्होंने मुझे दुनिया में अलग-थलग कर रखा है।' यह सोचते हुए उसने जल्दी-जल्दी रेजर चलाना शुरू किया। उसके चेहरे पर भीतर से एक और चेहरे ने झाँका। एक देवेश को धकियाकर दूसरा देवेश आ खड़ा हुआ। लेकिन देवेश को हँसी नहीं आई। यह नया चेहरा एकदम दयनीय दिख रहा था।

तभी दरवाजे की घंटी बज उठी। वह समझ गया, उसका परिवार आ गया। अब उसके चेहरे की परख होगी।

उसने दरवाजा खोला तो उसकी पत्नी चौंकी। बेटे ने गौर से देखा फिर चिल्लाया, 'बन्दर-बन्दर'। बेटी ने कहा, 'अरे पापा, आप?'

सब अन्दर आए, पत्नी के चेहरे पर थोड़ी नाराजगी दिखी। देवेश ने पूछा, "मैं कैसा लग रहा हूँ?"

"चिरकुट दिख रहे हो और क्या?"

देवेश ने इसे पॉजिटिव कमेंट माना। उसे लगा वह अपने लक्ष्य में कामयाब हुआ है। उसने पत्नी से कहा, "आज मुझे बत्रा के यहाँ जाना है। आज उसका बर्थ डे है न।"

"तो इस तरह कार्टून बनकर जाओगे।"

"हाँ, वह कार्टूनों को ही पसन्द करता है।"

पत्नी कुछ समझ न सकी। वह भुनभुनाती हुई चली गई। वह बच्चों के पास आया।

"क्या मुझे देखकर हँसी आ रही है?" उसने पूछा।

"बहुत आ रही है।" यही कहकर चीनू उसके गाल छूने लगा।

लेकिन रिंकी ने कहा, 'छी।'

देवेश को अन्दाजा नहीं था कि पार्टी शुरू कितने बजे से होती है। वह उतावला हो

रहा था। बत्रा गुड़गाँव में रहता था। वहां उसने एक शानदार कोठी बनवाई थी। देवेश को पता भी नहीं था कि उसके घर से गुड़गाँव जाने में कितना वक्त लगेगा।

वह बार-बार पार्टी के बारे में ही सोच रहा था। बत्रा इतना बड़ा अधिकारी है, उसकी पार्टी भी शानदार और भव्य होती होगी बिल्कुल फिल्मों की पार्टियों की तरह।

कहीं ऐसा न हो कि बत्रा देवेश को देख ही न पाए। फिर जाने का क्या मतलब रह जाएगा।

उसे पार्टी में जल्दी पहुँचना होगा, मेहमानों के आने से पहले ही। पता नहीं, प्रिंस कुमार और घनश्याम उसे देखकर क्या सोचेंगे। कुछ भी सोचें, क्या फर्क पड़ता है। वह उनसे कहेगा कि बत्रा साहब ने खुद उसे बुलाया है।

क्यों न बत्रा को फोन पर पहले ही मुबारकबाद दे दी जाए। आज तक उसने ऐसा नहीं किया था। इन्हीं सब औपचारिकताओं को न निभाने के कारण ही तो बत्रा उसके प्रति दुर्भावना रखता है।

देवेश ने बत्रा का मोबाइल नम्बर मिलाया। लेकिन वह इंगेज्ड आ रहा था। उसने दो-तीन बार डायल किया। हर बार यही सन्देश मिला-"यह नम्बरद व्यस्त है।"

फोन पर बधाई देना बेकार है। बेहतर होगा कि वह सीधे पार्टी में पहुँचकर बत्रा को चकित कर दे। वहाँ वह अधिक-से-अधिक व्यस्त दिखने का कोशिश करेगा। उसे प्रयास करना होगा कि वह बार-बार बत्रा के सामने आए। वह ऐसा कर सकता है। कि किसी वेटर से शराब या सॉफ्ट ड्रिंक वाली ट्रे ले और खास मेहमानों को परोसे।

काश उसे डान्स करना आता। वह अपने बेहतरीन नृत्य से ध्यान अपनी ओर खींच सकता था। मूँछ काटकर जाने का उसका आइडिया एकदम सही है। उसे देखकर लोगों का थोड़ा मनोरंजन होगा।

देवेश फिर आईने के सामने खड़ा हो गया और अपने गाल पर हाथ फेरने लगा। उसने इस बार हँसने की कोशिश नहीं की, आँख मूँदकर सोचा कि वह हँसता हुआ कैसा दिखेगा।

तभी पत्नी ने आकर कहा, "निहारते रहो अपना सुन्दर चेहरा...कब से खाने के लिए आवाज दे रही हूँ, सुन ही नहीं रहे।"

वह खाना खाए आया। जल्दी से खाना खत्म कर बिस्तर पर लेट गया। हर रविवार को वह खाने के बाद एक-दो घण्टे सोया करता था। पर उसे नहींद नहीं आई। जब उसे पत्नी के खर्राटे सुनाई देने लगे तो वह उठा और बाल्कनी में चक्कर काटने

लगा।

शाम चार बजे वह गुड़गाँव के लिए निकल पड़ा। उसने सोचा शाम छह बजे तक पहुँच जाना ठीक रहेगा, पार्टी शुरू होने से पहले। वह सबसे पहले पहुँचकर बत्रा को अपना चेहरा दिखाने को आतुर था। उसने ऑफिस की डायरी से बत्रा का पता नोट कर जेब में रख लिया था।

वह यह नहीं समझ पा रहा था कि उसे तोहफा क्या दिया जाए। उसने बड़ी देर तक इस पर दिमाग खपाया कि आखिर कौन सी नायाब चीज दी जाए जिसे बत्रा लम्बे समय तक याद रखे। फिर उसने यह इरादा ही छोड़ दिया। उसने तय किया कि वह बुके ही भेंट करेगा।

वैसे तो उसे पार्टी–वार्टी से डर लगता था। भीड़ और शोर–शराबा उसे पसन्द नहीं था। उसे लगता था कि इन मौकों पर लोग आत्मीयता का दिखावा करते हैं। वह शादियों में जाने से बचता था। वह आज तक कुछ रिश्तेदारों की शादी में ही गया था, जहाँ जाना उसकी मजबूरी थी। लेकिन अब उसे अपनी यह आदत बदलनी होगी। उसे अब जहाँ भी मौका लगे, वह जाएगा।

देवेश ने दफ्तर में अक्सर लोगों को बत्रा की कोठी के बारे में बात करते सुना था। खासकर प्रिंस कुमार और घनश्याम उसका इस तरह वर्णन करते जैसे वह कोई नायाब नमूना हो। उनका कहना था वह गुड़गाँव का सबसे बढ़िया मकान है।

गुड़गाँव एक नमूना था–आधुनिक भारत का, भूमंडलीकृत भारत का। देश में विदेशी पूँजी का जो बीज बोया गया था उसकी फसल यहाँ दिखने लगी थी।

यहाँ दुनिया के कई बड़े देशों की औद्योगिक इकाइयाँ थीं। यहाँ कॉल सेन्टर थे जिनमें नौजवान रोज दस से पन्द्रह घण्टे तक काम करते थे। वे सात समुन्दर पार के किसी बैंक का हिसाब रखते थे। या दिनभर सैकड़ों लोगों को फोन करते थे। फोन पर वे मशीनी भाषा बोलते थे। वे उस तरह विनम्र होते जिस तरह एक मशीन हो सकती थी। वे उस तरह अनुरोध करते जिस तरह एक कम्प्यूटर अनुरोध कर सकता था। उन्हें उतनी ही तनख्वाह मिलती थी जितने में वे किसी तरह जीवित रह सकें। हफ्ता–दो हफ्ता पर एक जबर्दस्त पार्टी होती थी जिसमें वे जमकर शराब पीते और झूमते–नाचते। ऐसा करते हुए उन्हें लगता वे विश्व ग्राम के नागरिक हैं।

उनकी जेब में सेलफोन का लेटेस्ट मॉडल रहता था। इसी में उनकी आत्मा रहती थी। यह सेलफोन उन्हें औरों से अलग होने के अहसास से भर देता था। इसी के जरिए

वे दुनिया से जुड़े थे। वे इसी के जरिए प्रेम करते और घृणा भी। वे प्रेम करते, सम्भोग करते और अपने अन्तरंग क्षणों का चित्र सेलफोन से उतारकर बाजार में बेच देते। उनके लिए जीवन का हर प्रसंग बिकाऊ था। उनके लिए यह जिन्दगी ही तिजारत थी।

जिन देशों ने अपने संविधान में श्रमिकों के अधिकारों के लिए पन्ने रंग डाले थे उन्होंने यहाँ की अपनी औद्योगिक इकाइयों में मजदूरों के अधिकारों पर ताला जड़ रखा था। उनकी नजर में एक भारतीय मजदूर की कीमत उनके कम्प्यूटर के एक मामूली पुर्जे से भी कम थी। जब मजदूर कुछ बोलता तो उन कम्पनियों के अफसरान चौंक जाते थे, जब मजदूर कुछ माँगते थे, वे भड़क उठते। राज्य की पुलिस उन कम्पनियों के प्राइवेट गार्ड की तरह खड़ी रहती थी, आदेश की प्रतीक्षा में।

उन कम्पनियों के संचालक ईश्वर की तरह थे जो इस देश को स्वर्ग में बदलने आए थे। दिक्कत यह थी कि स्वर्ग का निर्माण मजदूरों के बगैर मुमकिन नहीं था। मजदूर जब सड़क पर उतर आते थे तो पूरे देश में हाहाकार मच जाता था। लगता था अब टूटा, अब टूटा स्वर्ग बनाने का सपना। देश का मध्यवर्ग, छाती पीटने लगता था, औद्योगिक संगठनों के अगुआ, फॉरेन रिटर्न आर्थिक विश्लेषक और पत्रकार स्यापा करने लगते थे कि बचाओ गुड़गाँव को, बचाओ गुड़गाँव को। नाक कट गई देश की, इन क्षुद्र मजदूरों की वजह से।

इस गुड़गाँव में पहुँचकर देवेश थोड़ी देर के लिए ठिठका। उसने जल्दी से अपनी जेब टटोली। उसका परिचय पत्र उसके पास था। उसे राहत मिली। बत्रा के यहाँ, उसे अन्दर जाने से रोका गया तो...।

लेकिन क्यों रोका जाएगा। आखिर वह बत्रा की कम्पनी का स्टाफ है, वह भी मैनेजर। वह उस प्रबन्धक वर्ग का है जिसके ऊपर इस देश को सँवारने का भार है। उसे इस पर गर्व क्यों नहीं है? उसे अपनी वरिष्ठता का अहसास क्यों नहीं है? वह अपने को गया गुजरा आदमी क्यों समझता है?

''मुझे गर्व है कि मैं मैनेजर हूँ।'' भुनभुनाया देवेश। उसे और किन–किन चीजों पर गर्व करना चाहिए? हिन्दू होने पर, सवर्ण होने पर या कुछ और पर...।

उसे बत्रा की तरह सोचना चाहिए। बॉस इज ऑलवेज राइट। उसे भी अपनी पोजीशन को एंज्वॉय करना चाहिए। आज वह हँसेगा, हँसकर रहेगा।

देवेश ने जैसा सोचा था, वैसा ही था बत्रा का मकान, आधुनिक स्थापत्य का नमूना, सामने कई गाड़ियाँ लगी थीं। मतलब यह कि लोग आने लगे थे। बाहर से ही

सजावट दिख रही थी। देवेश बड़ी देर तक खड़ा रहा। उसके भीतर धुकधुकी हो रही थी।

वह साहस करके आगे बढ़ा और गेट तक आया। उसने देखा कि अहाते में आकर्षक वर्दी पहने वेटर इन्तजाम में जुटे हैं। एक तरफ कोने में खाने की चीजें रखने के लिए दो काउंटर बनाए गए थे एक तीसरा काउंटर भी था। बीचोंबीच एक बड़ी-सी टेबल लगाई थी। शायद इसी पर केक काटा जाने वाला था।

वहाँ वेटरों के अलावा और कोई नजर नहीं आ रहा था। देवेश समझ नहीं पाया कि आखिर बत्रा का परिवार रहता कहा है। कहीं ऐसा तो नहीं कि इस घर में घुसने का कोई और रास्ता है। बड़े लोग घर में कई गेट रखते होंगे।

उसने एक वेटर से पूछा, ''बत्रा साहब कहाँ हैं?''

वेटर ने पहले समझने की कोशिश की फिर बोला, ''मेरे को पता नहीं।''

देवेश ने थोड़ा सकुचाते हुए कहा, ''इस घर में घुसने का कोई और रास्ता है क्या?''

''नहीं जी।'' वेटर ने कहा और प्लेटें निकालने लगा। तभी स्पीकर पर एक धुन बजने लगी।

वह अन्दर चला आया। अब उसका साहस थोड़ा बढ़ा। वह घूम-घूमकर मकान का मुआयना करने लगा। तभी मकान के भीतर से एक आदमी निकला और वेटरों को निर्देश देने लगा। देवेश ने सोचा यह बत्रा का नौकर हो सकता है। उसने उससे पूछा, ''बत्रा साहब कहाँ हैं?''

''साहब मन्दिर गए हैं।'' उसने जवाब दिया।

तो क्या बत्रा जन्मदिन के अवसर पर पूजा करने गया है।

''आप कहाँ से आए हैं?'' उस आदमी ने पूछा।

''दफ्तर से। मैं उनके ऑफिस में...मेरा मतलब है उनके अंडर काम करता हूँ।''

''बैठिए।'' यह कहकर जब उसने कुर्सी की ओर इशारा किया तो देवेश को अच्छा लगा। उसने उत्सुकता जाहिर की, ''दफ्तर से कुछ और लोग भी आए हैं क्या?''

''पता नहीं।'' यह कहकर वह आदमी चला गया। देवेश बैठा नहीं। वह खड़ा इधर-उधर देखता रहा। इस बीच रोशनी जला दी गई। संगीत थोड़ा और तेज हो गया।

तभी गेट पर थोड़ी गहमागहमी हुई।

एक बड़ी कार आकर रुकी। उसमें से एक लम्बा-चौड़ा आदमी निकला। उसने सिल्क का कुर्ता और धोती पहन रखी थी। उसके गले में एक चेन लटक रही थी जिसकी चमक बता रही थी कि वह सोने की थी। कार के आगे से एक खद्दरधारी उतरा जिसके चेहरे पर रुक्षता थी। दोनों तेजी से अन्दर घुसे। पीछे से एक पुलिस वैन रुकी। एक पुलिस वाला भी उनके साथ चला।

कहीं यह कोई मन्त्री-वन्त्री तो नहीं! बत्रा की हर तरह के लोगों से जान-पहचान थी। शायद इसीलिए कम्पनी का मालिक उसे इतना महत्त्व देता था। इस साल उसकी तनख्वाह दोगुनी कर दी गई थी।

ऐसे-ऐसे दो-चार लोग और आ गए तो देवेश को बत्रा पहचानेगा भी नहीं। वह बेकार ही चला आया। उसका मिशन कामयाब होने वाला नहीं है।

देखते-ही-देखते दो-तीन गाड़ियाँ और रुकीं। कुछ लोग उतरे। हँसती-खिलखिलाती महिलाएँ आईं गहनों से लदी हुई, तिलमिला देनेवाली सुगन्ध फेंकती हुई। कुछ और खद्दरधारी आए। एक साधु भी कुछ चेलों के साथ आया। सब आते और न जाने कहाँ अन्दर गुम हो जाते।

देवेश अपना बुके उठाए आँखें फाड़े उन्हें देखता रहा। खाना लग चुका था। दूसरी आर गिलास और बोतलें भी रख दी गई थीं। बत्रा कहाँ है? अगर वह दिख जाए तो देवेश बुके थमाकर निकल लेगा।

उसी समय बात्रा की गाड़ी सामने आकर रुकी। देवेश जल्दी से उस ओर बढ़ा। गाड़ी से पहले एक महिला उतरी फिर बत्रा निकला। देवेश ने बत्रा की ओर बुके बढ़ा दिया और कहा, ''सर, जन्म दिन बहुत-बहुत मुबारक हो।''

बत्रा थोड़ा असमंजस में दिखा। उसने बुके ले लिया और आगे बढ़ने लगा। फिर ठहरा, मुड़कर उसने देवेश को देखा और जोर से बोला, ''अरे यार कविजी, तुम हो।''

देवेश को लगा जैसे उसने कोई बड़ा किला फतह कर लिया हो।

''हैप्पी बर्थ डे।'' उसने भाव-विभोर होकर कहा। बत्रा ने जोर का ठहाका लगाया और कहा, ''यार, ये तुमने क्या हुलिया बनाया लिया है। मैंने तो पहचाना ही नहीं।'' फिर उसने उस महिला से कहा, ''ज्योति, ये हैं हमारे कवि जी।''

देवेश समझ गया कि वे मिसेज बत्रा हैं। उसने दोनों हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम

किया। मिसेज बत्रा ने भी हाथ जोड़े और मुस्कुराईं। फिर वे तेजी से अन्दर घुस गईं।

बत्रा देवेश के कन्धे पर हाथ रखकर चलने लगा। देवेश फूला नहीं समा रहा था। उसे उम्मीद नहीं थी कि इतनी जल्दी इतनी बड़ी सफलता मिल जाएगी। वह तो यह सोचकर डरा हुआ था कि बत्रा उसकी ओर ध्यान देगा ही नहीं, लेकिन वह तो बड़ी आत्मीयता से उससे मिल रहा था।

बत्रा उसे अन्दर ले आया। अन्दर एक बड़ा हॉलनुमा कमरा था, जिसमें सोफे लगे थे। जो लोग अभी बाहर से आए थे, वे सब वहाँ बैठे थे।

बत्रा को देखते ही सब एक साथ उठे, ''बधाई हो बधाई हो, हैप्पी बर्थ डे'' का स्वर गूँज उठा।

देवेश की आँखें प्रिंस कुमार और घनश्याम को ढूँढ़ रही थीं। वे शायद अभी नहीं आए थे या इस बार वे नहीं आनेवाले थे। अच्छा है, वे न आएँ। देवेश ने इस बार बाजी मार ली।

वह यह सोच ही रहा था कि उसने देखा कि प्रिंस कुमार और घनश्याम अन्दर से एक बड़े ट्रे में केक पकड़े चले आ रहे हैं। तो ये कमबख्त पहले से ही घुसे हुए थे...। देवेश सन्न रह गया। लेकिन उसने तत्काल अपने को सामान्य बनाया और बत्रा से पूछा, ''सर, मेरे लायक कोई सेवा हो तो बताएँ।''

''अरे नहीं-नहीं। एंज्वॉय, एंज्वॉय।'' यह कहकर बत्रा उस धोती-कुर्ता वाले आदमी से बातें करने लगा, फिर कुछ देर बाद उसने देवेश को इशारे से बुलाया और उस आदमी से कहा, ''ये हैं कवि जी, आप ही के स्टेट के हैं। हमारे दफ्तर में काम करते हैं।''

''अच्छा,'' उस धोती-कुर्ते वाले ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें नचाते हुए कहा, ''तो ये कवि हैं, हो जाए कोई कविता-उविता।''

देवेश ने सोचा कि वह साफ-साफ कह दे कि वह कवि नहीं है। बत्रा उसे यूँ ही कवि कहता है। लेकिन अचानक उसके जेहन में यह विचार कौंधा कि वह कविता सुनाकर अपनी धाक जमा सकता है। अगर उसने मेहमानों का मनोरंजन कर दिया तो बत्रा खुश हो जाएगा।

मगर वह कौन-सी कविता सुनाए? कॉलेज के दिनों में उसने कुछ तुकबन्दी की थी पर वह सब अब याद करना मुश्किल था। पढ़ाई के दौरान उसका साहित्य से ताल्लुक बना हुआ था लेकिन अब पढ़ाई-लिखाई से नाता टूट गया था।

यहाँ इस तरह के लोगों के बीच कैसी कविताएँ सुनाई जा सकती हैं। वह दिमाग पर जोर देने लगा। उसने वर्षों पहले पढ़ी कुछ पुरानी शायरी याद करने की कोशिश की। इधर-उधर के शब्द उठाकर जोड़-तोड़कर वह पंक्तियाँ गढ़ने लगा।

सब लोग अहाते में आ गए थे। बीच वाली टेबल पर केक रख दिया गया। लेकिन देवेश का इन सब चीजों पर ध्यान नहीं था। वह शब्दों के जंगल में दौड़ रहा था।

केक काटा गया। तालियाँ बजीं, खिलखिलाहट गूँजी, मुबारकबाद देने का सिलसिला चला लेकिन देवेश पंक्तियाँ गढ़ने की कवायद कर रहा था। आज उसे ''कविजी'' होना प्रमाणित करना था।

लोग कुर्सियों पर बैठने लगे। शराब परोसजी जाने लगी। देवेश को आखिरकार कुछ लाइनें सूझ गईं। वह बत्रा के पास आकर बोला, ''सर मैं एक कविता सुनाना चाहता हूँ।''

बत्रा कुछ कहता उससे पहले ही धोती-कुर्ते वाले ने कहा, ''हो जाए हो जाए।''

बत्रा ने ऊँची आवाज में कहा, ''लेडिज एंड जेंटलमैन, मेरे कुलीग मिस्टर देवेश एक कविता सुनाना चाहते हैं।''

सारे लोग एक घेरा बनाकर खड़े हो गए। इतने लोगों की नजरें अपने ऊपर पाकर देवेश थोड़ा घबराया। उसने गौर किया कि घनश्याम और प्रिंस कुमार के चेहरे का रंग उड़ा जा रहा है। इससे उसका उत्साह बढ़ा। उसने कहा, ''लेडिज एंड जेन्टलमैन, मैं अपने बड़े भाई, गुरु और बॉस मिस्टर बत्रा को कविता में मुबारकबाद देना चाहता हूँ।''

फिर उसने दो-तीन बार गला साफ किया और सुनाने लगा–

सितारों से भी आगे हैं तेरी मंजिल
हजारों साल यह सजती रही महफिल
दुश्वारियाँ हों दूर, बढ़े तेरी आँखों का नूर
बढ़े दौलत बढ़े शोहरत
गमों को जीत लेने की
मिले हर पल नई ताकत

फरिश्ते दे रहे दुआ
रहो सलामत रहो सलामत
ऐ मेरे रहनुमा
जन्म दिन हो मुबारक
मुबारक मुबारक!

लोगों ने तालियाँ बजाईं। बत्रा ने देवेश की पीठ थपथपाई। तभी भीड़ में से किसी ने कहा, ''एक और।'' कुछ महिलाओं ने फरमाइश की, 'वन्स मोर।'

देवेश धर्मसंकट में पड़ गया। इतनी मुश्किल से उसने एक कविता गढ़ी थी। अब क्या करे वह? उसने बिना सोचे-विचारे कहना शुरू किया–

तेरे साये को झुक-झुक सलाम करता हूँ
अपनी हर साँस को तेरे नाम करता हूँ।
तेरे हर रुख में एक इशारा है
तेरे हुक्म पे ही अपना काम करता हूँ।
हर गम में तू सहारा है
तू कहे तो दिन तू कहे तो शाम कहता हूँ।

इस बार पहले से भी ज्यादा शाबाशी मिली। उसे मन-ही-मन हँसी आई। इन दो कौड़ी की कविताओं ने कमाल कर दिया था। ये घटिया कविताएँ उसे मुसीबत से निकालने वाली थीं। वे उसकी तरक्की का रास्ता खोलने जा रही थीं।

सारे मेहमानों के बीच देवेश अचानक लोकप्रिय हो उठा। घनश्याम और प्रिंस कुमार एक कोने में ''कर्मचारी'' की तरह खड़े नजर आ रहे थे वहीं देवेश हाई प्रोफाइल लोगों में घुल-मिलकर बातें कर रहा था। किसी ने उससे कहा, ''आइए-आइए आप भी लीजिए। कवि लोग तो इसके शौकीन होते हैं।''

देवेश के जी में आया कि वह भी गिलास उठा ले। मगर परिणाम सोचकर वह डर गया। उसने आज तक नहीं पी थी। पीने से पता नहीं क्या गड़बड़ हो जाएगी। उस सज्जन ने आग्रह किया, ''पीजिए-पीजिए।''

बत्रा ने उसे बचा लिया, ''कविजी शराब नहीं पीते, इन्हें जूस पिलाइए।''

लेकिन बगैर पीऐ ही देवेश के ऊपर नशा चढ़ने लगा। यह सफलता का मद था।

उसे उम्मीद से कहीं ज्यादा कामयाबी हाथ लगी थी। वह इस अवसर का भरपूर इस्तेमाल करना चाहता था।

लोग टुकड़ों-टुकड़ों में बँटकर शराब पी रहे थे, गप्प लड़ा रहे थे। देवेश किसी एक ग्रुप के पास चला जाता और बातचीत में शामिल हो जाता। गप्प करते-करते सब हँस पड़ते थे। देवेश ने सोचा, उसे भी हँसना चाहिए। अगर वह नहीं हँसेगा तो उसका गलत अर्थ निकाला जाएगा। उसे हमेशा की तरह हँसने में कष्ट हो रहा था लेकिन उत्साह में वह उस तकलीफ को भूल गया। फिर उसे लगा जैसे हँसने के लिए अतिरिक्त प्रयत्न नहीं करना पड़ रहा है।

लेकिन थोड़ी देर बाद उसे अहसास हुआ कि उसके प्रति लोगों का व्यवहार बदल रहा है। वह ज्यों ही हँसता लोग हँसना बन्द कर उसे देखने लगते फिर बात बदल देते या इधर-उधर सरक जाते।

देवेश एक ग्रुप से दूसरे ग्रुप में चला गया। वहाँ भी ऐसा ही हुआ। फिर वह महिलाओं की तरफ बढ़ा। औरतों ने भी मुँह फेर लिया। वह जब कुछ बोलने लगा तो एक महिला तेजी से भागी। देवेश ने देखा कि एक आदमी बत्रा को उसकी ओर ऊँगली दिखाकर कुछ कह रहा है। देवेश ने अपने को ऊपर से नीचे तक देखा। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्या हो गया है कि लोगों का नजरिया उसके प्रति बदल चुका है। वह तो एकदम सन्तुलित है, बाकी लोग तो शराब पीकर तरह-तरह की हरकतें कर रहे हैं, उन पर तो किसी को आपत्ति नहीं है। वह बत्रा के पास पहुँचा और बोला, ''सर मजा आ रहा है। ऐसी पार्टी तो हमने देखी ही नहीं।'' फिर जब वह हँसा तो बत्रा की मुख मुद्रा बदल गई। बत्रा कुछ बोलता, उससे पहले ही एक सिक्युरिटी गार्ड ने उसके कान में कुछ कहा। वह गेट की तरफ चला गया।

देवेश समझ नहीं पा रहा था कि माजरा क्या है। कुछ देर पहले उसकी कविता पर दाद देनेवाले लोग उससे किनारा क्यों करने लगे हैं। अभी कुछ देर पहले जिस आदमी ने उसे अपना विजटिंग कार्ड देकर घर पर आने का निमन्त्रण दिया था, वह भी उसे देखते ही मुँह क्यों फेर रहा है।

आखिर वह किससे पूछे। घनश्याम से या प्रिंस कुमार से? ये दोनों तो जल-भुने हुए हैं। ये सही बात थोड़े ही बताएँगे। वह उस आदमी के पास गया जिसने उसे विजटिंग कार्ड दिया था।

देवेश ने पूछा, ''मुझसे कोई गलती हो गई है क्या?''

''नहीं-नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।'' यह कहकर वह आदमी दूसरी ओर चला गया। उसकी बातों से बेरुखी साफ झलक रही थी।

देवेश ने सोचा, वह खामखाँ परेशान है। यह उसका भ्रम भी हो सकता है कि लोग उससे कट रहे हैं। आखिर वह इतना महत्त्वपूर्ण तो है नहीं कि हर आदमी उसी पर ध्यान देता रहे।

क्यों न एक कविता और सुनाई जाए। ऐसा करके वह मेहमानों का ध्यान फिर खींच सकता है। लेकिन क्या सुनाए? वह दिमाग पर जोर देने लगा। उसे पता रहता कि यहाँ कविता सुनानी पड़ेगी ाते वह पाँच-दस कविताएँ रटकर आता।

तभी उसने देखा कि कुछ महिलाएँ नाच रही हैं और लोग उन्हें घेरे खड़े हैं। वह भी वहाँ पहुँचा। सब ताली बजा-बजाकर हँस रहे थे। उसने भी ताली बजाई और ज्यों ही हँसने की कोशिश की, उसे लगा उसके सीने में कुछ फँस रहा है। उसने आँखें बन्द कर लीं और पूरी ताकत लगाकर जोर का ठहाका लगाया।

उसने आँखें खोलीं तो देखा कि नाचने वाली महिलाएँ सहमी हुई खड़ी हैं और लोग खुसुर-फुसुर कर रहे हैं। उसके कन्धे पर किसी ने हाथ रखा। उसने घूमकर देखा। प्रिंस कुमार खड़ा था। उसने इशारे से अपने साथ चलने को कहा। एक कोने में ले जाकर वह फुसफुसाया, ''भाई साहब, खाना शुरू हो चुका है। आप खा क्यों नहीं लेते?'' आपको दूर जाना है।

''मेरी चिन्ता मत करो यार।'' देवेश ने कहा और वापस वहीं चला आया। नृत्य फिर शुरू हो चुका था। इस बार कुछ पुरुष भी शामिल थे। देवेश ने महसूस किया कि नृत्य के दर्शक नृत्य से ज्यादा उसे देख रहे हैं। कोई सीधा-सीधा तो कोई तिरछी नजरों से।

देवेश ने देखा कि घनश्याम उसकी ओर चला आ रहा है। वह वहाँ से जाने लगा। घनश्याम भी उसके पीछे-पीछे चला आया। उसने उसे पकड़कर कहा, ''बत्रा साहब ने कहा है कि आप यहाँ से चले जाएँ।''

देवेश समझ गया कि यह प्रिंस कुमार व घनश्याम की साजिश है उन्हें यह बर्दाश्त नहीं हो पा रहा कि वह बत्रा की नजर में चढ़े। उसने घनश्याम को झिड़क दिया, ''क्या बात कर रहे हो। बत्रा साहब ऐसा क्यों कहंगे?''

''उन्होंने खुद मुझे बुलाकर कहा है कि मैं आपको जाने के लिए बोलूँ।''

''ठीक है, मैं बत्रा साहब से पूछता हूँ।'' यह कहकर देवेश भीड़ की तरफ बढ़ा।

वह बत्रा को खोजने लगा। पर वह दिखा नहीं। थोड़ी देर बाद मिसेज बत्रा आईं। देवेश ने सोचा उनसे गर्मजोशी से मिलना चाहिए। वह उनके सामने जाकर खड़ा हो गया।

मिसेज बत्रा नृत्य देखने लगीं, तभी एक आदमी ने नाचते-नाचते अपनी टोपी हवा में उछाली, फिर नाटकीय अन्दाज में उसके नीचे सिर ले जाकर उसे पहना। इस पर मिसेज बत्रा जोर से हँसी। देवेश भी जोर लगाकर हँसा। मिसेज बात्रा तमतमा उठीं, ''ये क्या कर रहे हैं आप?''

यह कहकर वे चली गईं। कुछ देर बाद मुस्टंडा सा आदमी देवेश के पास आया और कान में बोला, ''आपको बत्रा साहब बुला रहे हैं। आइए मेरे साथ।''

देवेश उस आदमी के पीछे-पीछे चलने लगा। वह अन्दर आया। हॉल को पार करने के बाद एक कॉरीडोर से होकर वह देवेश को एक छोटे-से कमरे में ले गया।

''बैठिए।'' उसने कहा।

''यहाँ!'' देवेश को हैरानी हुई।

वह मुस्टंडा कुछ क्षण देवेश को देखता रहा फिर झटके से बाहर निकला और दरवाजा बन्द कर दिया।

''खटाक'' की आवाज आई यानी उसने बाहर से कुंडी लगा दी थी।

अरे! देवेश समझ गया कि उसे इस कमरे में बन्द कर दिया गया है। लेकिन क्यों? उसकी आँखों के सामने कुछ फिल्मों के दृश्य तैर गए जिसमें कोई माफिया डॉन किसी को मिलने के लिए बुलाता है और इसी तरह कमरे में बन्द कर देता है। क्या बत्रा उसी तरह का खतरनाक आदमी है? वह चाहता क्या है?

देवेश ने चारों तरफ नजरें दौड़ाई। यह स्टोर रूम लग रहा था। दो पुरानी कुर्सियाँ थीं और एक टेबल। एक कोने में अखबार का बंडल पड़ा था। एक तरफ कुछ टूटे खिलौने भी थे। प्लास्टिक के कुछ जार रखे थे। एक पुराने मॉडल का टी.वी. था जिस पर धूल जमी थी।

करीब आधा घंटा बीत गया लेकिन बत्रा नहीं आया न उसका कोई सन्देश। कहीं उसे जान-बूझकर तो नहीं बन्द किया गया है? हो सकता है यह बात बत्रा को न मालूम हो। कहीं यह प्रिंस कुमार या घनश्याम की बदमाशी तो नहीं है। लेकिन इस घर में उनकी क्यों चलेगी। कहीं मिसेज बत्रा...। वे उससे नाराज भी हो गई थीं। पर क्यों? उसने तो कोई अभद्रता नहीं की थी उनके साथ। वह तो उनकी हँसी में शामिल था।

यह अपमानित करने का नया तरीका तो नहीं...। हो सकता है यह सब बत्रा के

निर्देश पर ही हुआ हो। तो क्या उसकी प्रसन्नता और वह सब कुछ जो थोड़ी देर पहले हुआ, एक नाटक था?

जो भी हो, बत्रा से साफ-साफ बात कर लेनी चाहिए। यह सोचकर उसने अपनी पैंट की बाईं जेब में हाथ डाला। अरे! मोबाइल तो है ही नहीं। उसने दाईं जेब में हाथ डाला। वहाँ भी नहीं था मोबाइल। फिर उसने शर्ट की जेब पर हाथ डाला। वहाँ भी नहीं...। वह फर्श पर इधर-उधर देखने लगा।

आखिर कहाँ चला गया मोबाइल। उसे अच्छी तरह याद है, वह घर से मोबाइल लेकर चला था। कहीं अहाते में तो नहीं गिर गया या किसी ने बस में तो नहीं निकाल लिया।

देवेश की नसें फड़कने लगीं और साँस तेज चलने लगी। वह जोर से चिल्लाया, ''मुझे बाहर निकालो।'' उसने जोर से दरवाजे पर चार-पाँच लात जमाईं। वह खिड़की की तलाश करने लगा। एक परदे से खिड़की छिपी थी। नीचे उसकी सिटकनी थी जो बड़ी सख्त हो गई थी। उसमें जंग भी लगा था। देवेश ने उसे ऊपर उठाने की कोशिश की पर उसके हाथ में एक अजीब थरथराहट समा गई। उसने ऊपर देखा। उसमें रोशनदान भी था। उसने जल्दी-जल्दी टेबल पर एक कुर्सी रखी फिर उस पर चढ़ा और किसी तरह पंजों के बल खड़ा होकर रोशनदान तक पहुँच सका।

बाहर दूर-दूर तक पेड़ नजर आ रहे थे। दरख्तों के पास कुछ ऊँची इमारतों में रोशनी झिलमिला रही थी। यह बत्रा के मकान का पिछवाड़ा था।

देवेश ने किसी तरह रोशनदान में अपना मुँह लगाया और जोर से चिल्लाया। उसकी आवाज उन पेड़ों के बीच जाकर कहीं खो जा रही थी। वह नीचे आ गया।

उसने खिलौने देखे तो उसे अपने बच्चे याद आ गए। ये काफी महँगे खिलौने थे जो खराब हो चुके थे। इन्हीं खिलौने के लिए बच्चे जिद करते थे पर वह खरीद नहीं पाता था। वह उन्हें किसी तरह सस्ते खिलौनों के लिए राजी कर लेता था।

उसके बच्चों ने खाना खा लिया होगा। उनकी मम्मी उन्हें सो जाने की हिदायत दे रही होगी पर चीनू सो नहीं रहा होगा। वह देवेश का इन्तजार कर रहा होगा। वह उसके बगैर सो नहीं पाता।

देवेश का ध्यान बाहर की आवाज पर गया। संगीत की हल्की आवाज आ रही थी। बीच-बीच में ठहाके और लोगों की बातचीत भी सुनाई पड़ती थी।

यह उसके जीवन का आखिरी दिन भी हो सकता है। बत्रा उसे मारकर पीछे के

जंगल में फेंक दे तो...। किसे पता चलेगा? देवेश जैसे लोगों की चिन्ता किसे है? इस शहर में उसके परिवार के अलावा उसका अपना है ही कौन?

बाहर से किसी की ऊँची आवाज आने लगी जैसे कोई किसी को डाँट रहा हो। देवेश ने सुनने की कोशिश की। दो-तीन लोग चिल्ला रहे थे। ''बास्टर्ड...फक यू फक यू'' जैसे शब्द छन-छन कर आ रहे थे।

अँधेरा छा गया। तो क्या यहाँ भी लाइट जाती है। ऐसा तो नहीं कि सिर्फ इस कमरे की लाइट जान-बूझकर काट दी गई हो। उसने फिर चीखना चाहा लेकिन उसके मुँह से आवाज न निकल सकी। उसके पेट में अजीब कुड़कुड़ाहट होने लगी थी। चक्कर भी आ रहा था।

कितना भयावह होता है वह क्षण जब जीवन पर पूरी तरह अँधेरा छा जाता है, उम्मीद के रहे-सहे निशान भी खत्म हो जाते हैं।

उसे लगा वह कई प्रकाश वर्ष दूर नक्षत्रों के पास से अपने को देख रहा है-एक आदमी सड़क पर बस का इन्तजार करता हुआ-एक आदमी अपनी पत्नी को तनख्वाह थमाता हुआ-एक आदमी अपने बच्चों की उँगली पकड़ उन्हें स्कूल पहुँचता हुआ-एक आदमी अपने बॉस के सामने सिर झुकाए खड़ा हुआ-एक आदमी हँसने की कोशिश करता हुआ-एक आदमी छह गुना आठ के कमरे में दम तोड़ता हुआ।

लाइट आ गई। देवेश ने आँखें खोलीं। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब सपना है या हकीकत। तभी कुछ पैरों की आहट सुनाई पड़ी। कुछ लोग बातचीत कर रहे थे। उनमें एक महिला का स्वर भी शामिल था।

दरवाजा खुला। सबसे पहले वही मुस्टंडा दिखा जिसने उसे बन्द किया था। उसके पीछे एक और मुस्टंडा, बिल्कुल उसी के जैसा, खड़ा था। देवेश ने अपने को परिस्थितियों के हवाले खड़ा कर दिया था।

पहले मुस्टंडे ने कहा, ''आइए, चलिए।'' दोनों मुस्टंडों ने उसका एक-एक हाथ पकड़ लिया जैसे उसे पेशी के लिए ले जाया जा रहा हो। बाहर कोई महिला नहीं थी। हो सकता है वह चली गई हो।

देवेश से चला नहीं जा रहा था। मुस्टंडे उसे सहारा दे रहे थे। वे उसे अहाते में लेकर आए जहाँ पार्टी चल रही थी लेकिन अब वहाँ मेहमान नहीं दिखाई दे रहे थे, सिर्फ बैरे प्लेट समेट रहे थे।

देवेश को बाहर लाया गया। एक गाड़ी में उसे धकेलकर दरवाजा बन्द कर दिया

गया। उसमें ड्राइवर पहले से बैठा था। दरवाजा बन्द कर मुस्टंडे चले गए। गाड़ी चल पड़ी। पता नहीं देवेश कहाँ जा रहा है। हो सकता है उसका अपहरण किया जा रहा हो। उसे किसी अज्ञात स्थान पर ले जाया जा रहा हो। सम्भव है, उसे खत्म करने का नया तरीका ढूँढ़ा गया हो।

देवेश ने किसी तरह अपने को सँभाला और बोला, ''कहाँ ले जा रहे हो?''

''आपको बाहर तक छोड़ देता हूँ, वहाँ से आपको बस मिल जाएगी, आप घर चले जाइएगा।'' ड्राइवर ने जवाब दिया।

घर! देवेश को विश्वास नहीं हुआ। क्या उसे छोड़ दिया गया? वह रिहा हो गया? क्या सचमुच?

उसने अपने घर के बारे में सोचा उसका इन्तजार करते–करते सब लोग सो गए होंगे। उन्होंने उसके मोबाइल पर कई बार रिंग किया होगा, फिर निराश हो गए होंगे।

''साहब, एक बात पूछूँ...'' ड्राइवर ने थोड़ा सकुचाते हुए कहा।

''पूछो।'' देवेश बोला।

''आप जान–बूझकर उस तरह कर रहे थे?''

''किस तरह?'' देवेश हैरत में पड़ गया।

''आप कभी कुत्ते की तरह भौंकने लगते थे कभी सुअर की तरह गुर्राने लगते थे।''

''क्या! ऐसा मैंने कब किया?'' देवेश जैसे आसमान से गिरा।

''उस समय जब सब लोग नाच रहे थे और एक आदमी टोपी से खेल दिखा रहा था।''

''मैं तो हँस रहा था।''

''नहीं, शुरू में तो लगा कि आप हँस रहे हैं लेकिन फिर आपके मुँह से भयानक आवाज आने लगी। कुछ लोगों ने कहा कि आप नशे में ऐसा कर रहे हैं। फिर पता चला कि आपने तो पी भी नहीं है। आपके दफ्तर के एक आदमी ने कहा कि आप थोड़ा खिसके हुए हैं। लेकिन बत्रा साहब ने तो कुछ और ही कहा।''

''क्या कहा?'' देवेश की उत्सुकता बढ़ी।

''वे तो यह कह रहे थे कि आप जान–बूझकर ऐसा कर रहे हैं। आप उनकी पार्टी

खराब करने के लिए आए थे, क्योंकि आप उनसे बदला लेना चाहते थे। उन्होंने आपका प्रमोशन नहीं किया इसलिए।''

''लेकिन मुझे घर में क्यों बन्द कर दिया?''

''आपको घर में बन्द कर दिया?'' ड्राइवर के चेहरे पर आश्चर्य उभरा फिर उसने कुछ याद करते हुए कहा, ''बत्रा साहब ने आपके दफ्तर के उस आदमी को कहा था कि वह आपको किसी तरह से वहाँ से हटाए लेकिन उसने बताया कि आप जाने का नाम नहीं ले रहे हैं। फिर मैडम ने कहा कि आपको कहीं और बिठा दिया जाए। लेकिन उन्होंने घर में बन्द करने को नहीं कहा होगा। बत्रा साहब बहुत नाराज हो गए हैं आपसे।''

यह कहकर उसने गाड़ी रोक दी और उँगली से दूसरी ओर इशारा करते हुए कहा, ''वहाँ से दिल्ली के लिए बस मिल जाएगी।''

देवेश बिना कुछ कहे उतर आया। ड्राइवर ने हाथ हिलाया और गाड़ी मोड़ ली। देवेश गाड़ी को जाते हुए देखता रहा।

फिर उसने अपने बारे में सोचा। क्या वह एक भयानक हँसी हँस रहा था। कुत्ते की तरह भौंकते और सुअर की तरह गुर्राते वह कैसा लग रहा होगा। लोग उससे डर रहे होंगे।

यह सोचकर उसे हँसी आ गई। उसने पूरी ताकत लगाकर हँसी रोकने की कोशिश की। ऐसा करते हुए उसके आँसू निकल आए। वह उन्हें रोक नहीं पाया।

संजय कुंदन

पेशे से पत्रकार संजय कुंदन का जन्म 7 दिसंबर, 1969 को पटना, बिहार में हुआ। संजय मूलतः कवि हैं, और कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। कविता के लिए भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार और हेमन्त स्मृति सम्मान मिल चुका है। दो कविता संग्रह 'कागज के प्रदेश में' और 'चुप्पी का शोर' प्रकाशित हो चुका है। कविता की एक अच्छी खासी पारी खेलने के बाद अचानक कहानी लिखना शुरू कर दिया। कहानियों ने भी अपनी एक अलग जगह बनाई। पहला कहानी संग्रह 'बॉस की पार्टी' भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित है। एक उपन्यास 'टूटने के बाद' भी लिख चुके हैं। यह भी भारतीय ज्ञानपीठ से ही प्रकाशित है।